जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौन सिटी

Rashtradoot

फोन:- 230200, 230400 फैक्स:- 07469-230600 वर्ष: 17 संख्या: 132 प्रभात हिण्डौन सिटी, रविवार 15 मार्च, 2026 पो. रजि.SWM-RJ-6069/2017-18 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

अमेरिका ने ईरान के अति महत्वपूर्ण टापू ''खार्ग आईलैण्ड'' पर भारी बमबारी की

जवाबी कार्यवाही में ईरान ने यू.एई. के सबसे बड़े ''ऑयल टर्मिनल'' फुजैराह बंदरगाह पर बमबारी की

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- जैसा कि विदित ही है, ''खार्ग आयलैण्ड'' से ईरान का 90 प्रतिशत ऑयल निर्यात होता है।
- अगर फुजैराह टापू का ''ऑयल टर्मिनल'' क्षतिग्रस्त हुआ और वहाँ से ऑयल का ''ट्रांस्पोर्टेशन संभव नहीं हो पाया तो इस ''ऑयल टर्मिनल'' को मरम्मत करके दुरस्त करके ट्रांसपोर्टेशन के काबिल बनाने में कई महीने लग जाएंगे और तब तक, ''ऑयल का निर्यात, स्थगित रहेगा।
- इसी प्रकार, क्योंकि ईरान के तट काफी छिछले हैं, यानि गहरे नहीं हैं, वहाँ भारी भरकम बड़े-बड़े ''ऑयल टैंकर'' तट तक नहीं पहुँच सकते। अतः ईरान, विश्व के बड़े-बड़े ऑयल ले जाने वाले जहाजों को ''खार्ग आईलैण्ड'' पर खड़ा करवाता है। वहाँ उन जहाजों पर ऑयल लाद कर निर्यात करता है। अतः अगर अमेरिका की बमबारी से, ''खार्ग आईलैण्ड'' की, जहाजों पर ऑयल लादने की सुविधा क्षतिग्रस्त हो गई तो ईरान का ''ऑयल का 90 प्रतिशत निर्यात खतरे में पड़ जाएगा।
- इसी ''खार्ग आईलैण्ड'' से ईरान का ऑयल चीन को निर्यात होता है। अगर, चीन की ''ऑयल'' खरीद खतरे में पड़ी तो कोई आश्चर्य की बात नहीं, अगर चीन भी खाड़ी देशों के वर्तमान युद्ध में शरीक हो जाए।

नई दिल्ली, 14 मार्च। सभी संकेत बताते हैं कि पश्चिम एशिया का युद्ध नियंत्रण से बाहर होता जा रहा है और खतरनाक रूप से एक बहुत बड़े संघर्ष में बदल सकता है। माना जा रहा है कि खार्ग द्वीप पर हमला करने और उस पर नियंत्रण लेने की योजना का उद्देश्य होर्मुज़ स्ट्रेट को ईरान के नियंत्रण से निकालना है।

संयुक्त राज्य अमेरिका ने ईरान के अत्यंत महत्वपूर्ण खार्ग द्वीप की सुविधाओं पर बमबारी की है और वहां मौजूद उसके सैन्य ठिकानों को तबाह कर दिया है। इसके जवाब में ईरान ने इस क्षेत्र में मौजूद सभी अमेरिकी ठिकानों और उनसे जुड़े संस्थानों पर हमला करने की कसम खाई है।

लगभग तुरंत ही जवाबी कार्रवाई करते हुए ईरान ने संयुक्त अरब अमीरात के फुजैराह बंदरगाह पर बमबारी की। यह क्षेत्र का सबसे बड़ा तेल टर्मिनल माना जाता है। अगर यह बंदरगाह लंबे समय तक काम से बाहर हो जाता है, तो बड़े पैमाने पर तेल परिवहन महीनों तक ठप हो सकता है। संघर्ष को और अधिक विनाशकारी और घातक स्तर पर ले जाते

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भाजपा व तृणमूल में पत्थर चले

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 14 मार्च। शनिवार को कोलकाता के गिरीश पार्क पास तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) और भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के समर्थकों के बीच झड़प हो गई। यह स्थान ब्रिगेड परेड ग्राउन्ड से लगभग 5 किलोमीटर दूर है, जहाँ कुछ समय बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रैली को संबोधित किया।

भाजपा समर्थकों का आरोप है कि जब वे प्रधानमंत्री के समर्थन में नारे लगाते हुए रैली स्थल की ओर जा रहे थे, तभी कुछ इलाकों से अचानक उन

- यह सब हुआ, प्रधानमंत्री के रैली स्थल से मात्र 5 किलोमीटर दूर और रैली से आधा घंटा पहले। दोनों पक्षों ने एक दूसरे पर झगड़ा शुरु करने का आरोप लगाया।

पर पत्थर फेंके गए।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, दोनों पार्टियों के समर्थकों ने एक-दूसरे पर पत्थर फेंके और नारेबाजी की।

भाजपा का आरोप है कि इस झड़प में कई वाहनों को नुकसान पहुँचा।

लेकिन स्थानीय टी एम सी कार्यकर्ताओं ने इन आरोपों का खंडन

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पाकिस्तान को कतई उम्मीद नहीं थी, इतना भारी पड़ जाएगा रक्षा गठबंधन

सऊदी अरब के साथ किये गये रक्षा गठबंधन की शर्तों के अनुसार, पाकिस्तान व सऊदी अरब एक दूसरे के पक्ष में कूदेंगे, अगर कोई बाहरी हमला हुआ

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- पाकिस्तान-ईरान से लड़ना नहीं चाहता, क्योंकि बलूचिस्तान व अफगानिस्तान में पहले से ही बगावत व युद्ध जैसी स्थिति है तथा अगर शिया प्रमुख देश, ईरान से युद्ध में उलझना उसके लिए संकट और गहरा कर देगा, क्योंकि पाकिस्तान में भी काफी शिया मुसलमान हैं।
- अभी तो पाकिस्तान यह कहकर बच रहा है कि ईरान ने भी अभी तक सऊदी अरब को ''शत्रु'' घोषित नहीं किया है और ईरान की असली घोषित लड़ाई इज़रायल से है।
- पर, अगर ईरान ने सऊदी अरब के ''ऑयल इंस्टॉलेशन्स'' पर हमला किया तो ईरान के खिलाफ सऊदी अरब की लड़ाई खुले में आ जाएगी और पाकिस्तान के समक्ष कोई विकल्प नहीं रह जाएगा, सिवाय ईरान के खिलाफ युद्ध में सऊदी अरब के साथ खड़ा होने के।
- पाकिस्तान के प्र.मंत्री शाहबाज़ शरीफ, सऊदी अरब की यात्रा पर हैं और उन पर दबाव डाला जाएगा कि वे अब ईरान के खिलाफ युद्ध में खड़े हों। पाकिस्तान, सऊदी अरब को भी नाराज़ नहीं करना चाहता, क्योंकि उसकी नाज़ुक आर्थिक स्थिति में सऊदी अरब ही उसको आर्थिक तंगी से पार लगाने वाला ''मित्र'' नज़र आ रहा है।

नई दिल्ली, 14 मार्च। भारत के रक्षा विशेषज्ञ सुशांत सरीन ने बताया कि जब पाकिस्तान ने पिछले साल सितंबर में सऊदी अरब के साथ स्ट्रैटेजिक म्यूचुअल डिफेंस एग्रीमेंट (एसएमडीए) पर हस्ताक्षर किए थे, तब उसकी सेना-नियंत्रित सरकार ने शायद यह नहीं सोचा था कि यह समझौता जल्द ही इतना बड़ा बोझ साबित होगा।

पाकिस्तानी जनरलों और नेताओं ने खुद को और अपनी जनता को यह भरोसा दिलाया था कि सऊदी अरब पाकिस्तान पर धन की वर्षा करेगा और बदले में पाकिस्तान सऊदी सुरक्षा की गारंटी देगा तथा पूरे मध्य-पूर्व में अपने राजनीतिक और कूटनीतिक प्रभाव का विस्तार करेगा।

पाकिस्तानियों ने इस समझौते को इस तरह प्रस्तुत किया कि यह उनकी सैन्य क्षमता की मान्यता है और मुख्य रूप से इज़रायल के खिलाफ है, जिसने पाकिस्तान और सऊदी अरब के एसएमडीए पर हस्ताक्षर करने से कुछ दिन पहले दोहा में हवाई हमला किया था। यह भी कहा गया कि पाकिस्तान सऊदी अरब को हूती लड़ाकों और अन्य गैर-राज्य व राज्य-समर्थित ताकतों के खिलाफ सुरक्षा सहायता देगा।

हालांकि पाकिस्तानियों ने कभी कल्पना नहीं की थी कि उनकी किराए पर उपलब्ध सुरक्षा सेवाएं ईरान के खिलाफ इस्तेमाल करने के लिए मांगी जा सकती हैं। इसका कारण यह था कि उस समय सऊदी अरब और ईरान के बीच संबंध धीरे-धीरे सुधर रहे थे और दोनों अपने पुराने तनाव को पीछे छोड़ने की कोशिश कर रहे थे।

लेकिन पाकिस्तान की जरुरत से ज्यादा चालाकी अब उसे मुश्किल स्थिति में ले आई है। एक तरफ अमेरिका-इज़रायल के ऑपरेशन ''एपिक फ्यूरी'' और ''लायन्स रोर'' हैं और दूसरी तरफ ईरान का ''ऑपरेशन फतह खैबर''। ईरान जब सऊदी अरब समेत, अन्य अमेरिकी सहयोगी खाड़ी देशों को निशाना बना रहा है, तब पाकिस्तान को डर है कि उससे एसएमडीए के तहत सऊदी अरब की मदद करने को कहा जा सकता है, जिसके पाकिस्तान के लिए गंभीर दीर्घकालिक राजनीतिक और सुरक्षा परिणाम हो सकते हैं।

संघर्ष की शुरुआत से ही यह सवाल उठ रहा है कि सऊदी अरब के साथ पाकिस्तान क्या भूमिका निभाएगा, खासकर तब, जब ईरान देश के भीतर लक्ष्यों पर मिसाइल और ड्रोन हमले कर रहा था।

पाकिस्तान ने दावा किया है कि ईरान को उसने कड़ी चेतावनी दी थी, इस कारण ही उसने सऊदी अरब को अपेक्षाकृत कम निशाना बनाया। पाकिस्तान के विदेश मंत्री ने दावा किया कि ईरान इस डर से सऊदी अरब पर सीधे हमले से बच रहा था कि पाकिस्तान सऊदियों के समर्थन में युद्ध में कूद सकता है। हालांकि ईरान ने कुवैत, यूएई, ओमान, बहरीन और कतर पर कई हमले किए। पाकिस्तान ने इसे सऊदी अरब और अपने लिए एक तरह का संतोषजनक सैन्य और कूटनीतिक समाधान बताया।

पाकिस्तान इस समय पहले ही कई मोर्चों पर उलझा हुआ है, बलूचिस्तान और खैबर-पख्तूनख्वा में दो बड़े विद्रोह, अफगानिस्तान के इस्लामिक अमीरात के साथ अघोषित संघर्ष, ईरान के सर्वोच्च नेता अली खामेनेई की हत्या के बाद उपजा तनाव, विपक्षी दलों से टकराव और कमज़ोर अर्थव्यवस्था। ऐसे समय में पाकिस्तान यह कदापि नहीं चाहेगा कि वह मध्य-पूर्व के बड़े युद्ध में, वह भी अमेरिका और इज़रायल के साथ मिलकर किसी दूसरे मुस्लिम देश के खिलाफ शामिल हो।

अरब देश, जिनमें सऊदी अरब भी शामिल है, ईरान पर सीधे युद्ध घोषित करने या प्रहार करने से हिचक रहे हैं, वे सिर्फ अपना बचाव कर रहे हैं। इस बात से पाकिस्तान को राहत है। अगर सऊदी अरब खुद ईरान पर युद्ध घोषित करने को तैयार नहीं है, तो वह पाकिस्तान से यह उम्मीद कैसे कर सकता है? सऊदी अरब की अनिच्छा का कारण यह भी था कि उसके संसाधन, जैसे तेल के कुंए तथा रिफाइनरीज़ काफी असुरक्षित हैं।

दूसरी ओर पाकिस्तान के विश्लेषकों का कहना है कि एसएमडीए केवल सऊदी अरब की रक्षा के लिए है, किसी दूसरे देश पर हमला करने के लिए नहीं। इसके बावजूद पाकिस्तानी नेता सऊदियों को खुश करने की कोशिश कर रहे हैं। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने कहा कि पाकिस्तान 1998 के परमाणु परीक्षणों के दौरान और उसके बाद मिली आर्थिक मदद के लिए हमेशा सऊदी अरब का ऋणी रहेगा। उनके प्रवक्ता ने भी कहा कि पाकिस्तान हर हाल में सऊदी अरब के साथ खड़ा रहेगा।

सऊदी अरब का मानना है कि ईरान ने उस पर मिसाइलें दागी हैं, जिन्हें सऊदी एयर डिफेंस ने रोक लिया। नुकसान सीमित रहा है, लेकिन चूंकि सऊदी अरब पर हमला हुआ है, इसलिए

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ईरान ने बगदाद में अमेरिकी दूतावास पर मिसाइल दागी

बगदाद, 14 मार्च। पश्चिम एशिया में 12 दिनों से अमेरिका-इजराइल और ईरान के बीच चल रहे युद्ध के बीच शनिवार को ईरान ने इराक की राजधानी बगदाद स्थित अमेरिकी दूतावास पर मिसाइल हमला किया। मिसाइल दूतावास परिसर के भीतर बने हेलीपैड के पास गिरी जिससे इमारत क्षितग्रस्त हो गई और अमेरिकी वायुरक्षा प्रणाली को भी नुकसान होने की खबर है।

समाचार चैनल अल जज़ीरा एवं अन्य मीडिया संगठनों की रिपोर्टों के अनुसार इराक की राजधानी बगदाद स्थित अमेरिकी दूतावास पर शनिवार को एक मिसाइल दूतावास परिसर के भीतर बने हेलीपैड के पास गिरी, जिससे इमारत को नुकसान पहुंचा और परिसर से लपटें एवं धुआं उठता देखा गया। इस हमले का निशाना अमेरिकी दूतावास परिसर स्थित वायु रक्षा प्रणाली का स्टेशन था।

घटना के बाद इलाके में सुरक्षा बढ़ा दी गई है, जबकि हमले में किसी के हताहत होने की अभी तक आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। रिपोर्टों में कहा गया है कि हमले में दूतावास की हवाई सुरक्षा प्रणाली का एक हिस्सा भी क्षतिग्रस्त हुआ है।

ईंधन ला रहे दो भारतीय जहाजों ने होर्मुज़ स्ट्रेट पार किया

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल के बाद ईरान ने भारतीय जहाजों को होर्मुज़ से सुरक्षित गुजरने की अनुमति दी।
- ये दोनों भारतीय जहाज हैं, शिवालिक व नंदा देवी। शिवालिक में 40 हज़ार मीट्रिक टन गैस है और नंदा देवी में ईंधन है।
- इससे एक दिन पहले एक अन्य जहाज भी सफलतापूर्वक होर्मुज़ को पार कर भारत के मुंबई बंदरगाह पहुंचा था।
- वर्तमान में दो दर्ज़न भारतीय झंडा लगे जहाज होर्मुज़ स्ट्रेट के बाहर खड़े हैं। जहाजरानी मंत्रालय के विशेष सचिव राजेश सिन्हा ने बताया, भारतीय झंडे वाला जहाज जग प्रकाश ओमान से अफ्रीका जाने के लिए होर्मुज़ से होकर जाने की तैयारी में है।

नई दिल्ली, 14 मार्च। शिपिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (एससीआई) के भारतीय ध्वज वाले दो एलपीजी टैंकर ''शिवालिक'' और ''नंदा देवी'' ने शनिवार को होर्मुज़ जलडमरूमध्य (स्ट्रेट) सफलतापूर्वक पार कर लिया और अब भारत की ओर बढ़ रहे हैं। सूत्रों के अनुसार, यह पारगमन ''बहुत सावधानी से किया गया ऑपरेशन'' था, जिसे ईरान और क्षेत्र की अन्य शक्तियों के सहयोग से पूरा किया गया।

यह यात्रा नई दिल्ली और तेहरान के बीच गहन कूटनीतिक प्रयासों के बाद संभव हो पाई। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने फरवरी के अंत में संकट शुरू होने के बाद से अपने ईरानी समकक्ष सैयद अब्बास अराघची के साथ चार दौर की बातचीत की है। गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी भारतीय जहाज़ों के सुरक्षित आवागमन को सुनिश्चित करने के लिए ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेज़ेश्कियन के साथ उच्च स्तरीय चर्चा की।

शिवालिक लगभग 40,000 मीट्रिक टन गैस लेकर तथा नंदा देवी भी बड़ी मात्रा में ईंधन लेकर आ रहा है। इन जहाज़ों के सफलतापूर्वक पार होने से एक दिन पहले ही भारत आ रहा एक अन्य जहाज़ ईरान और ओमान के बीच स्थित इस महत्वपूर्ण संकरे समुद्री मार्ग को पार कर चुका है।

वर्तमान में भारत, स्ट्रेट के दोनों ओर मौजूद दो दर्जन से अधिक भारतीय ध्वज वाले व्यापारिक जहाज़ों के लिए सुरक्षित मार्ग सुनिश्चित करने पर काम कर रहा है। शिपिंग मंत्रालय के विशेष सचिव राजेश कुमार सिन्हा ने मीडिया ब्रीफिंग के दौरान इस बात की पुष्टि की कि ''जग प्रकाश'' नामक एक अन्य भारतीय ध्वज वाला टैंकर, जो ओमान से अफ्रीका के लिए पेट्रोल ले जा रहा है, स्ट्रेट के पूर्वी हिस्से से रवाना हो चुका है।

नॉर्थ कोरिया ने दस बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 14 मार्च। ईरान युद्ध लगातार जारी है, इसी बीच शनिवार को उत्तर कोरिया ने कम से कम 10 बैलिस्टिक मिसाइलें दाग दीं। उस समय

- जब यह मिसाइलें दागीं गईं, तब दक्षिण कोरिया और अमेरिका संयुक्त नौ सेना अभ्यास कर रहे थे। कूटनीतिक हलकों में चर्चा है, कि ऐसा करके क्या ईरान वॉर के बीच नार्थ कोरिया के प्रमुख किम जोंग ने ट्रंप को अपने तेवरों का संकेत दिया है।

अमेरिकी सेना अपने सहयोगी दक्षिण कोरिया के साथ संयुक्त सैन्य अभ्यास कर रही थी। यह अमेरिकी राष्ट्रपति

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सोनम वांगचुक जोधपुर जेल से रिहा

जोधपुर, (कासं)। लद्दाख के सोशल एक्टिविस्ट सोनम वांगचुक 170 दिन बाद जोधपुर सेंट्रल जेल से बाहर आ गए हैं। उन पर लगा नेशनल सिक्योरिटी एक्ट हटा दिया गया है।

शनिवार को सुबह करीब 10 बजे सोनम की पत्नी गीतांजलि जोधपुर जेल पहुंची थी। इसके बाद कागजी कार्रवाई

- केन्द्र सरकार ने उन पर से नेशनल सिक्यूरिटी एक्ट हटाया।

पूरी की गई और फिर दोपहर सवा एक बजे दोनों प्राइवेट कार में पुलिस सुरक्षा के बीच जिले से बाहर निकले।

केंद्र का यह फैसला उनकी पत्नी गीतांजलि द्वारा दायर याचिका को सुप्रीम कोर्ट में सूचीबद्ध किए जाने के बाद आया। गृह मंत्रालय के एक सूत्र ने कहा कि वांगचुक को शांति, स्थिरता और आपसी विश्वास बहाल करने के लिए रिहा किया गया। मंत्रालय ने यह भी कहा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

डिजिटल वॉर में अफवाहें मिसाइलों जितनी घातक साबित होती हैं

सूचना क्रांति के इस दौर में पलक झपकते ही खबरें विश्व भर में फैल जाती हैं, पर झूठ भी उतनी ही तेजी से फैलता है

- सुकुमार साह -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

- इसका नवीनतम उदाहरण है, इज़रायल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू की मौत की खबर। सोशल मीडिया पर ऐसे अनगिनत पोस्ट आए, जिनमें नेतन्याहू के मारे जाने की बात कही गई थी, किसी पोस्ट में इस सूचना का स्क्रीन शॉट था तो किसी की में वीडियो शेयर किया गया था।
- पर, जब तक फैक्ट चैकिंग टूल यह साबित कर पाते कि यह सारे स्क्रीन शॉट्स, वीडियो झूठे हैं और एआई से बनाए गए हैं, तब तक नेतन्याहू की मौत की खबर दुनियाभर में फैल चुकी थी।
- जब युद्ध चल रहा हो तो ऐसी अफवाहें मनोवैज्ञानिक रूप गहरा प्रभाव डालती हैं। अब यह जरूरी है कि जब कोई देश सशस्त्र संघर्ष में उलझा हो तो सैन्य रणनीति के साथ-साथ सूचना प्रबंधन पर भी पूरा फोकस करे, क्योंकि अनिश्चितता के माहौल में झूठ भी सच जैसा लगने लगता है।

नई दिल्ली, 14 मार्च। युद्ध की धुंध में गलत जानकारी हमेशा तेजी से फैलती रही है। लेकिन आर्टिफिशल इंटैलिजैंस और हाइपर कनैक्टेड सोशल मीडिया के इस दौर में, अब अफवाहें कुछ ही मिनटों में पूरी दुनिया में फैल सकती हैं। जिससे अटकलों, प्रचार और डिजिटल हेरफेर के बीच की सीमा धुंधली हो जाती है। इज़रायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की कथित मौत से जुड़ी हाल की वायरल अफवाहें यह दिखाती हैं कि भू-राजनीतिक संकट के समय झूठी कहानियां कितनी तेजी से जोर पकड़ सकती हैं।

जब मध्य पूर्व में इज़रायल, ईरान और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच तनाव बढ़ा, तो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ऐसे पोस्ट से भर गए, जिनमें दावा किया गया कि नेतन्याहू मारे गए हैं या गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। कुछ पोस्टों में ऐसे स्क्रीनशॉट भी साझा किए गए, जिनमें कथित तौर पर प्रधानमंत्री के अधिकारिक अकाउंट से उनकी मौत की घोषणा करने वाला मैसेज दिखाया गया था, जिसे कथित तौर पर कुछ ही देर बाद डिलिट कर दिया गया। अन्य पोस्टों में कहा गया कि नेतन्याहू का जनता को संबोधित करने वाला हाल का वीडियो असली नहीं है, ऑटिफिशल इंटैलिजैंस से बनाया गया है।

इनमें से कोई भी दावा सच नहीं था। फैक्ट चैकिंग करने वाले संगठनों और स्वतंत्र विश्लेषकों ने जल्दी ही साबित कर दिया कि ये स्क्रीनशॉट बनाए गए थे और नेतन्याहू के सत्यापित खातों पर ऐसा कोई संदेश कभी दिखाई ही नहीं दिया था। इज़रायली अधिकारियों ने भी पुष्टि की कि प्रधानमंत्री आधिकारिक बैठकों और सार्वजनिक ब्रीफिंग में हिस्सा लेते रहे।

फिर भी, पोस्ट में सुधार, और सही जानकारी सामने आने से पहले अफवाहें बहुत दूर तक फैल चुकी थीं। यह डिजिटल सूचना व्यवस्था की बार-बार सामने आने वाली विशेषता को दर्शाता है: सच्चाई की पुष्टि के मुकाबले गलत जानकारी ज्यादा तेजी से फैलती है।

एक खास दावा, जिसने ऑनलाइन लोगों का ध्यान खींचा, वह एक वीडियो के स्थिर फ्रेम पर आधारित था। कुछ लोगों को लगा कि उसमें नेतन्याहू के एक हाथ में छह उंगलियां दिखाई दे रही हैं। कुछ सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं ने इसे इस बात का सबूत मान लिया कि वीडियो कृत्रिम बुद्धिमत्ता से बनाया गया है, क्योंकि शुरुआती एआई से बनी तस्वीरों में अक्सर हाथ टेढ़े-मेढ़े या ज्यादा उंगलियों वाले दिखाई देते थे।

असल में विशेषज्ञों ने पाया कि वह तस्वीर के एंगल और वीडियो फ्रेम में मोशन कलर की वजह से पैदा हुआ एक साधारण ऑप्टिकल इल्यूज़न थी। जब वीडियो को सामान्य गति में देखा गया,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दो दिन में 92 हजार टन एल पी जी भारत पहुंचेगी

नई दिल्ली, 14 मार्च। देश में घरेलू रसोई गैस आपूर्ति को स्थिर रखने के लिए दो भारतीय जहाज जल्द ही गुजरात के बंदरगाहों पर पहुंचने वाले हैं। इनमें कुल 92,000 मीट्रिक टन लिक्विफाइड पेट्रोलियम गैस

- दो जहाज 16-17 मार्च को गुजरात के बंदरगाहों पर पहुंचेंगे।

(एलपीजी) लदी हुई है और ये 16-17 मार्च को गुजरात के प्रमुख पोर्ट्स पर डॉक करेंगे। पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय के अनुसार, इन जहाजों को प्राथमिकता के आधार पर बंदरगाह पर लगाने की व्यवस्था की गई है ताकि गैस आपूर्ति प्रभावित न हो। इससे रसोई गैस की उपलब्धता बनाए रखने और संभावित संकट को कम करने में मदद मिलेगी।

मंत्रालय के अधिकारी राजेश कुमार सिन्हा ने पत्रकार वार्ता में बताया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)